ग्रन्थमाला ‘बालसंस्कार’ : खण्ड ३

गुण बढाकर आदर्श बनें !

भूमिका

आदर्श विद्यार्थीकी सभी प्रशंसा करते हैं । पाठशालामें, घरमें तथा अन्यत्र उसकी प्रशंसा होती है । हमारा आचरण आदर्श होने हेतु हममें सद्‌गुण निर्माण होना आवश्यक है । भगवानको भी सद्‌गुणी बच्चे प्रिय हैं; क्योंकि वे स्वयं आनन्दमें रहकर अन्योंको भी आनन्द देते हैं ।

प्रस्तुत ग्रन्थमें स्वावलम्बन, एकाग्रता, आज्ञापालन, राष्ट्राभिमान, धर्माचरण आदि गुण बढाने हेतु बच्चोंको कैसे प्रयत्न करने चाहिए, इसका सरल विवेचन किया है । दोष दूर करने और गुण बढानेवाले सनातनके कुछ बालसाधकोंके उदाहरण भी दिए हैं । इन्हें पढकर अन्योंको भी प्रेरणा मिलेगी ।

‘बच्चोंमें आन्तरिक सुधार हो जानेपर ही वास्तविक अर्थोंमें उनके व्यक्तित्वका विकास होता है’, यह सूत्र ध्यानमें रख ग्रन्थमें कुछ आदर्श व्यक्तित्व एवं महान राष्ट्रपुरुषोंके जीवनके प्रसंग दिए हैं । उन प्रसंगोंसे बच्चोंके मनपर सम्बन्धित गुणका महत्त्व तत्काल अंकित होता है ।

इस ग्रन्थका अध्ययन करनेसे बच्चोंमें गुण बढें तथा उनके व्यक्तित्वका विकास हो, साथ ही उनका भावी जीवन आनन्दमय और सफल बने, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – संकलनकर्ता

बच्चो, शब्द शस्त्र हैं । शस्त्रका प्रयोग सोच-विचार कर करें; क्योंकि धनुषसे छूटा बाण और मुखसे निकला शब्द वापस नहीं लिया जा सकता । इसलिए सदैव सबसे प्रसन्नतापूर्वक और अच्छा बोलें !

अनुक्रमणिका

१. बच्चो, गुणवान क्यों बनना चाहिए ? १२

१ अ. गुणवान एवं आदर्श बालक सभीको अच्छे लगते हैं ! १२

१ आ. गुणवान बालकको भगवानके आशीर्वाद मिलते हैं ! १३

१ इ. जीवन आनन्दमय एवं सफल बनाने हेतु गुण आवश्यक १३

१ ई. गुणवान बालक ही भविष्यमें देशका आधारस्तंभ बनना १३

२. गुण-संवर्धन प्रक्रिया १४

२ अ. व्याख्या १४

२ आ. 'गुणसंवर्धन प्रक्रिया' कैसे क्रियान्वित करें ? १४

३. विविध गुण एवं उनकी वृद्धि हेतु किए जानेवाले प्रयास १७

३ अ. व्यावहारिक जीवनके लिए उपयुक्त कुछ गुण १७

३ आ. पढाई अच्छी होनेके लिए कुछ उपयोगी गुण ३९

३ इ. नैतिकता बढानेके लिए कुछ उपयोगी गुण २४

३ ई. साधना अच्छी होनेके लिए कुछ उपयोगी गुण ५०

३ उ. राष्ट्रहित-सम्बन्धी कुछ गुण ७४

३ ऊ. धर्मनिष्ठा बढाने हेतु उपयुक्त कुछ गुण ८२

४. पढाईके माध्यमसे गुणोंका संवर्धन कैसे होता है ? ८७

४ अ. व्यावहारिक गुण कैसे आत्मसात होते हैं ? ८८

४ आ. बौद्धिक गुण कैसे आत्मसात होते हैं ? ८८

४ इ. आध्यात्मिक गुण कैसे आत्मसात होते हैं ? ८९

५. विविध गुण आत्मसात करनेवाले सनातनके बालसाधक ९१